६. यथार्थ-१ : ब्रह्म सत्य जगत नित्य है

दिनांक : २४/०९/२०११

आदर्शवाद के अनुसार ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या लिखा है | क्या इसे समझा भी जा सकता है? क्या ऐसा सोचने में आता है? इसके उत्तर में नकारात्मक जवाब आता है | इसे समझ भी नहीं सकते,सोच भी नहीं सकते, ऐसे जवाब का क्या अर्थ है? ऐसी स्थिति में विकल्प का उदय हुआ | विकल्प के अनुसार व्यापक वस्तु रुपी सत्तामयता को ब्रह्म कहेंगें तब ब्रह्म सत्य, जगत शाश्वत को जाना जा सकता है, माना जा सकता है, प्रमाणित किया जा सकता है |

मानव ज्ञानावस्था में नियति सहज विधि से प्रस्तुत है | नियति सहज विधि का तात्पर्य सहअस्तित्व सहज विवेक के रूप में सार्थक होना पाया जाता है क्योंकि व्यापक वस्तु पारगामी, पारदर्शी है | पारदर्शी होना जड़ चैतन्य प्रकृति के साथ स्पष्ट हुआ है | यह अध्ययनगम्य हो चुका है | व्यवहार में सह-अस्तित्व प्रमाणित होना सम्भव हो गया है | व्यापक वस्तु में सभी जड़ चैतन्य डूबे, भींगे, घिरे रहते हुए कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता | पारगामी होने के आधार पर ही जड़ चैतन्य प्रकृति ऊर्जा सम्पन्न होना रहना पाया जाता है | यह अध्ययनगम्य हो चुका है | उर्जा सम्पन्नतावश जड़ चैतन्य प्रकृति मूल चेष्टा के रूप में कार्यरत रहना पाया जाता है | चैतन्य प्रकृति चेतनावश कार्य व्यवहार करता हुआ मिलता है | इसी कारणवश हर व्यक्ति समझ सकता है कि व्यापक वस्तु सभी क्रिया का आधार होते हुए भी व्यापक वस्तु में कोई परिवर्तन नहीं होता | व्यापक वस्तु में सभी जड़-चैतन्य प्रकृति डूबे, भीगे, घिरे रहने के रूप में अध्ययन हो चुका है | इस विधि से मानव व्यापक वस्तु को अपरिणामी, नित्य प्रतिष्ठा के रूप में देख पातें हैं | यह जागृति का महिमा है | जीवन में ही जागृति होना पाया जाता है | अध्ययन का मूल वस्तु विकसित चेतना है | विकसित चेतना पूर्वक ही मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व का ज्ञान होता है एवं प्रमाणित होना पाया गया है | इसी आधार पर विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्पात्मक अध्ययन में यह प्रावधानित है कि हर व्यक्ति समझदार हो सकते हैं,प्रमाणित हो सकते हैं,प्रयोजनशील हो सकते हैं | प्रयोजनशीलता का तात्पर्य अखंडता, सार्वभौमता ही है |

सर्वमानव के साथ अखण्ड समाज सहित सर्वदेश काल में परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के रूप में सार्वभौमता सफल होता है | इसी में मानव परम्परा विकसित चेतना सम्पन्नता सहित मानव लक्ष्य,जीवन मूल्यों को प्रमाणित करते हैं | मानव लक्ष्य अपने स्वरुप में समाधान,समृद्धि,अभय,सह-अस्तित्व रूप में पहचाना गया है | जीवन मूल्यों को सुख, शांति, संतोष, आनंद के रूप में पहचाना गया है | साथ में यह भी बोधगम्य हुआ है कि समाधान ही सुख रूप में; समाधान, समृद्धि को संयुक्त रूप में सुख,शांति के रूप में;समाधान, समृद्धि,अभयअर्थात वर्तमान में विश्वासको सुख, शांति, संतोष के रूप में और समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को सुख, शांति, संतोष, आनंद के रूप में होना देखा गया है | इससे यह भी प्रेरणा मिलती है कि हम स्वयं विकसित चेतना में प्रमाणित होने के फलस्वरूप वर्तमान होना सहज है | इस क्रम में मानव, सम्पूर्ण मानव के साथ अखण्ड समाज का प्रमाण, अखण्ड समाज नित्य उत्सव के रूप में वैभवित होने का प्रमाण सहित सार्वभौम व्यवस्था दस सोपनीय विधि से निर्वाचनपूर्वक प्रमाणित होता है | इसके लिए मानव तृषित है ही |

यह तो माना जा सकता है कि सर्वाधिक मानव तृषित हैं | फलस्वरूप इसे आचरित करना मानव कुल का मर्यादा है | फलस्वरूप सार्वभौम व्यवस्था, दस सोपानीय व्यवस्था प्रकट होता है जो निर्वाचन विधि द्वारा रहेगी | निर्वाचन कार्यक्रम हर एक सभा में अर्थात दस सोपानीय सभा में निर्वाचनपूर्वक दस-दस परिवार का एक प्रतिनिधि अगले सभा अथवा सोपान का गठन करेगा | इसी क्रम में परिवार सभा से चलकर विश्व परिवार सभा तक पहुंच पाते हैं | सभी सोपान में समान रूप में दस-दस व्यक्तियों का निर्वाचन होता है | दसों सभाओं से एक-एक प्रतिनिधि निर्वाचित होकर अग्रिम सभा का गठन करेगा | इस विधि से मानव जाति का उपकार, सहज विधि से सम्भव होगा |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत